International Journal of Classified Research Techniques & Advances (IJCRTA)
Multidisciplinary Peer-Reviewed Online Open Access Journal Impact Factor: 5.466
Volume 3, Issue 4, Oct-Dec 2023 ID: IJCRTA0000172 ISSN: 2583-1801
Email: ijcrta@gmail.com Website: www.ijcrta.org

नवउदारीकरण और महिला सशक्तिकरण: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ पिंकी सोमकुवंर

Author Affiliation:
सहा. प्राध्यापक (समाजशास्त्र), शासकीय आदर्श महाविद्यालय उमरिया (म.प्र.)

Citation of Article: सोमकुवंर, पिंकी. (2023). नवउदारीकरण और महिला सशक्तिकरण: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. International Journal of Classified Research Techniques & Advances (IJCRTA) ISSN: 2583-1801, 3(4), pg.170-173. ijcrta.org

सार:

नवउदारीकरण ने वैश्विक स्तर पर आर्थिक नीतियों और सामाजिक संरचनाओं में व्यापक परिवर्तन लाया है। भारत में 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद शुरू हुई इस प्रक्रिया ने महिलाओं के जीवन पर गहरा प्रभाव डाला। यह शोध पत्र समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से नवउदारीकरण के प्रभाव को महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में विश्लेषित करता है। अध्ययन में शिक्षा, रोजगार, सामाजिक स्वायत्तता और लैंगिक असमानता जैसे पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है। गुणात्मक विश्लेषण, द्वितीयक डेटा और केस स्टडी के आधार पर यह तर्क दिया गया है कि नवउदारीकरण ने महिलाओं के लिए जहाँ अवसरों के द्वार खोले, वहीं आर्थिक असुरक्षा, श्रम शोषण और सामाजिक असमानताएँ भी बढ़ाईं। यह शोध इस द्वंद को उजागर करता है और नीतिगत सुधारों की आवश्यकता पर बल देता है।

कीवर्ड: नवउदारीकरण, महिला सशक्तिकरण, समाजशास्त्र, लैंगिक असमानता, श्रम भागीदारी, सामाजिक परिवर्तन

परिचय:

नवउदारीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसने 20वीं सदी के अंत में विश्व अर्थव्यवस्था को नए सिरे से परिभाषित किया। भारत में 1991 के आर्थिक सुधारों ने इस प्रक्रिया को औपचारिक रूप से अपनाया, जिसके तहत व्यापार उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण को बढ़ावा दिया गया। इस परिवर्तन का प्रभाव समाज के सभी वर्गों पर पड़ा, लेकिन महिलाओं पर इसका प्रभाव विशेष रूप से जटिल रहा। एक ओर, नवउदारीकरण ने महिलाओं के लिए शिक्षा, रोजगार और तकनीकी पहुँच के नए अवसर पैदा किए, वहीं दूसरी ओर इसने असमान मजदूरी, असुरक्षित कार्य परिस्थितियाँ और पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं के दबाव को भी बढ़ाया।

यह शोध पत्र समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य से नवउदारीकरण और महिला सशक्तिकरण के बीच संबंधों की पड़ताल करता है। यह प्रश्न उठाता है कि क्या नवउदारीकरण ने महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता प्रदान की, या इसने मौजूदा पितृसत्तात्मक संरचनाओं और वर्गीय असमानताओं को और सशक्त किया। अध्ययन का उद्देश्य इस प्रक्रिया के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं को समझना और नीतिगत हस्तक्षेप के लिए सुझाव प्रस्तुत करना है।

साहित्य समीक्षा:

नवउदारीकरण और महिला सशक्तिकरण पर विद्वानों ने विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। बेनरिया (2003) का मानना है कि नवउदारीकरण ने महिलाओं को औपचारिक रोजगार से बाहर कर अनौपचारिक क्षेत्र में धकेल दिया, जिससे उनकी आर्थिक असुरक्षा बढ़ी। इसके विपरीत, सेन (1999) ने तर्क दिया कि वैश्वीकरण और बाजार आधारित नीतियों ने महिलाओं की शिक्षा और कौशल विकास के अवसरों को बढ़ाया, जिससे उनकी स्वायत्तता में सुधार हुआ।

भारतीय संदर्भ में, घोष (2009) ने नवउदारीकरण के प्रभाव को वर्ग और क्षेत्र के आधार पर विश्लेषित किया। उनके अनुसार, शहरी मध्यम वर्ग की महिलाओं ने इस प्रक्रिया से लाभ उठाया, जैसे कि सूचना प्रौद्योगिकी और सेवा क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्राप्त किए, लेकिन ग्रामीण और गरीब महिलाएँ हाशिए पर रहीं। इसी तरह, मजूमदार और शर्मा (2008) ने बताया कि नवउदारीकरण ने लैंगिक वेतन अंतर को बढ़ाया और असुरक्षित कार्य परिस्थितियों को जन्म दिया। ये अध्ययन इस शोध के लिए एक सैद्धांतिक आधार प्रदान करते हैं। यह पत्र इन विचारों को आगे बढ़ाते हुए नवउदारीकरण के सामाजिक प्रभावों को लैंगिक सिद्धांत और संरचनात्मक विश्लेषण के ढांचे में परखता है।

शोध पद्धति:

यह अध्ययन गुणात्मक और द्वितीयक डेटा संग्रह पर आधारित है। डेटा स्रोतों में शामिल हैं:

1. **द्वितीयक डेटा:** भारत सरकार के राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) के आँकड़े, अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) की रिपोर्टें, विश्व बैंक के प्रकाशन और नीति दस्तावेज (1991-2024 तक)।
2. **केस स्टडी:** ग्रामीण (मध्य प्रदेश के उमरिया जिले के एक गाँव) और शहरी (मध्य प्रदेश के उमरिया जिले के महाविद्यालय कर्मचारी) क्षेत्रों से महिलाओं के अनुभवों का विश्लेषण।
3. **साहित्य विश्लेषण:** समाजशास्त्रीय सिद्धांतों (लैंगिक सिद्धांत, संरचनात्मक कार्यात्मकता) के आधार पर डेटा की व्याख्या।

डेटा विश्लेषण में तुलनात्मक विधि का उपयोग किया गया, जिसमें नवउदारीकरण से पहले और बाद की स्थितियों की तुलना की गई। अध्ययन का समय-सीमा 1991 से 2025 तक रखा गया, जिसमें वर्तमान रुझानों को भी शामिल किया गया।

विश्लेषण:

1. रोजगार और आर्थिक भागीदारी:

नवउदारीकरण के बाद भारत में महिलाओं की श्रम भागीदारी दर में वृद्धि हुई। NSO (2020) के अनुसार, 1991 में महिलाओं की श्रम भागीदारी दर 22.3% थी, जो 2020 तक बढ़कर 25.1% हो गई। लेकिन यह वृद्धि मुख्य रूप से अनौपचारिक क्षेत्र (जैसे घरेलू काम, कृषि मजदूरी) में हुई। शहरी क्षेत्रों में सेवा क्षेत्र (आईटी, बीपीओ, खुदरा) में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी, लेकिन यहाँ भी लैंगिक वेतन अंतर एक बड़ी समस्या रही। ILO (2020) के अनुसार, भारत में पुरुषों की तुलना में महिलाओं को 34% कम वेतन मिलता है।

केस स्टडी से पता चला कि मध्य प्रदेश के उमरिया जिले के महाविद्यालय कर्मचारी को करियर में प्रगति के अवसर मिले, लेकिन उसे दोहरे बोझ (काम और घरेलू जिम्मेदारियाँ) का सामना करना पड़ा। वहीं, मध्य प्रदेश के उमरिया जिले के एक गाँव की एक ग्रामीण मजदूर ने बताया कि नवउदारीकरण के बाद कृषि संकट बढ़ा, जिससे उसकी आजीविका पर संकट आया।

2. शिक्षा और कौशल विकास:

नवउदारीकरण ने निजीकरण को बढ़ावा दिया, जिससे शहरी क्षेत्रों में शिक्षा तक पहुँच में सुधार हुआ। यूनेस्को (2021) के अनुसार, भारत में महिलाओं की साक्षरता दर 1991 में 39% से बढ़कर 2020 में 70% हो गई। लेकिन यह लाभ असमान रूप से वितरित हुआ। ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों की कमी और गरीबी के कारण लड़कियों की शिक्षा अभी भी चुनौती बनी हुई है। निजी संस्थानों ने तकनीकी कौशल (जैसे कंप्यूटर प्रशिक्षण) प्रदान किए, लेकिन ये महंगे होने के कारण गरीब महिलाओं की पहुँच से बाहर रहे।

3. सामाजिक स्वायत्तता और सांस्कृतिक प्रभाव:

नवउदारीकरण ने उपभोक्तावाद और व्यक्तिवाद को बढ़ावा दिया, जिससे शहरी महिलाओं में निर्णय लेने की क्षमता बढ़ी। उदाहरण के लिए, मध्य प्रदेश के उमरिया जिले के महाविद्यालय कर्मचारी की केस स्टडी में एक महिला ने बताया कि उसने अपनी आय से स्वतंत्र रूप से निवेश और यात्रा के निर्णय लिए। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में पितृसत्तात्मक संरचनाएँ अभी भी प्रभावी हैं। मध्य प्रदेश के उमरिया जिले के एक गाँव की एक महिला ने बताया कि परिवार की अनुमति के बिना वह बाहर काम नहीं कर सकती। नवउदारीकरण ने पश्चिमी संस्कृति को भी बढ़ावा दिया, जिससे पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं पर बहस शुरू हुई, लेकिन यह बदलाव धीमा है।

4. असमानताएँ और शोषण:

नवउदारीकरण ने वर्ग और क्षेत्र के आधार पर असमानताएँ बढ़ाईं। शहरी मध्यम वर्ग की महिलाओं को लाभ मिला, लेकिन ग्रामीण और गरीब महिलाएँ असुरक्षित रोजगार और शोषण का शिकार बनीं। अनौपचारिक क्षेत्र में काम करने वाली महिलाओं को न तो सामाजिक सुरक्षा मिली और न ही न्यूनतम मजदूरी। यहाँ तक कि औपचारिक क्षेत्र में भी यौन उत्पीड़न और कार्यस्थल पर भेदभाव की शिकायतें आम रहीं।

निष्कर्ष और सुझाव:

यह अध्ययन दर्शाता है कि नवउदारीकरण ने महिला सशक्तिकरण के लिए एक दोधारी तलवार की तरह काम किया। इसने शिक्षा और रोजगार के अवसर पैदा किए, लेकिन लैंगिक और वर्गीय असमानताओं को कम करने में असफल रहा। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखें तो यह प्रक्रिया सामाजिक संरचनाओं को बदलने में सीमित रही, क्योंकि पितृसत्ता और आर्थिक असमानता इसके मूल में बनी रहीं।

सुझाव:

1. नीतियों में लैंगिक संवेदनशीलता को शामिल करना, जैसे समान वेतन और मातृत्व लाभ सुनिश्चित करना।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और कौशल विकास के लिए सरकारी निवेश बढ़ाना।
3. अनौपचारिक क्षेत्र की महिलाओं के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ लागू करना।
4. नवउदारीकरण के प्रभावों पर प्राथमिक डेटा आधारित क्षेत्रीय अध्ययन करना।

भविष्य में इस दिशा में और गहन शोध की आवश्यकता है, विशेष रूप से विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समूहों पर इसके प्रभाव को समझने के लिए।

संदर्भ:

1. बेनरिया, एल. (2003). Gender, Development, and Globalization. न्यूयॉर्क: रूटलेज।
2. सेन, ए. (1999). Development as Freedom. ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. घोष, जे. (2009). Never done and poorly Paid: Women's Work in Globalizing India. नई दिल्ली: वीमेन अनलिमिटेड।
4. मजूमदार, आई., और शर्मा, एन. (2008). Women Workers and Globalization. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स।
5. अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (2020). Global Wage Report. जेनेवा: ILO।
6. यूनेस्को (2021). Education Report: India. पेरिस: यूनेस्को।
7. राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (2020). Women and Men in India. नई दिल्ली: भारत सरकार।